

सलाहकार समिति

1. पद्मश्री श्री कल्याण सिंह रावत, संयोजक - मैती आन्दोलन।
2. प्रो० एम०एस० पंवार, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, हे० न० ब० ग० केन्द्रीय वि० वि० श्रीनगर गढ़वाल।
3. प्रो० के०सी० पुरोहित, पूर्व निदेशक, हे० न० ब० ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर।
4. प्रो० अनीता रुडोला, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग हे० न० ब० ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पौड़ी परिसर।
5. प्रो० नरेन्द्र सिंह राना, भूगोल विभाग, बी०एच०यू० वाराणसी।
6. डॉ० अरूण एस० मगर, विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग, टी०सी० कॉलेज बारामती, पुणे, महाराष्ट्र।
7. डॉ० संभाजी बनसोडे, एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल, एस०एम०एस०एम०पी० कॉलेज, नाकेपुते, शोलापुर, महाराष्ट्र।
8. डॉ० सूर्यकांत बाघमारे, बी०एल०डी०एस० आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कालेज, टिकोता (विजयपुर) कर्नाटक।

आयोजन समितियाँ

1. **पंजीकरण समिति** - डॉ० देवकृष्ण, डॉ० राजीव दूबे
डॉ० अखिलेश कुमार सिंह, डॉ० बीरेंद्र चन्द, डॉ० मंजीत भण्डारी।
2. **स्वागत समिति** - डॉ० लक्ष्मी नौटियाल, डॉ० दुर्गेश नन्दिनी
श्री उमेश चन्द्र बंसल।
3. **प्रकाशन समिति** - डॉ० प्रवेश कुमार मिश्र, डॉ० देवकृष्ण, डॉ० राजीव दूबे।
4. **सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति** - श्री प्रदीप कुमार, डॉ० दुर्गेश नन्दिनी, श्री अरूण भट्ट, श्रीमती लक्ष्मी नेगी।
5. **अनुशासन समिति** - डॉ० शिवेन्द्र सिंह चन्देल, डॉ० मनोज कुमार सिंह, श्रीमती बन्दना सिंह।
6. **मुख्य/विशिष्ट अतिथि व्यवस्था समिति** - डॉ० गोपेश कुमार सिंह, डॉ० मनोज कुमार सिंह, श्री उमेश चन्द्र बंसल।
7. **जलपान/भोजन व्यवस्था समिति** - श्री राजकुमार पाल, श्री संदीप लिंगवाल।
8. **आवास व्यवस्था समिति** - डॉ० शिवेन्द्र सिंह चन्देल,
डॉ० अखिलेश कुमार सिंह।
11. **ग्रामीण जनों का प्रतिभाग एवं समलौण पौध रोपण व्यवस्था** - श्री वीरेन्द्र गोदियाल।

आयोजक मण्डल

संगोष्ठी संयोजक/सचिव - डॉ० जितेन्द्र कुमार नेगी

सहसचिव - डॉ० प्रवेश कुमार मिश्र
डॉ० शिवेन्द्र सिंह चन्देल
डॉ० श्याम मोहन सिंह
श्री रामसिंह नेगी

कोषाध्यक्ष - डॉ० अखिलेश कुमार सिंह

पंजीकरण प्रपत्र

नाम -
पदनाम -
विश्व विद्यालय/कालेज का नाम
.....
पता -
.....
मोबाइल नं -
ईमेल -
डी०डी०नं०/यू०पी०आई०नं०.....
दिनांक
धनराशि
आवास व्यवस्था : हाँ/नहीं
शोधपत्र/सांराश का शीर्षक

हस्ताक्षर

नोट:- आवास व्यवस्था के लिये संगोष्ठी तिथि से दो दिन पूर्व
मो० न० : 8004043877, 9760455496 पर सम्पर्क करें।



दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

“वनाग्नि एवं जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक संकट”

11-12 जून, 2025

संगोष्ठी स्थल

राठ महाविद्यालय, पैठाणी

सम्बद्ध हे० न० ब० ग० गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय



प्रायोजक :

O.N.G.C. New Delhi & GBP-NIHE

आयोजक :

IQAC एवं भूगोल विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी
(राठ शिक्षा विकास समिति)

मुख्य संरक्षक

श्री गणेश गोदियाल (संस्थापक राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संरक्षक

श्री मंगल सिंह

(प्रबन्धक, राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संगोष्ठी संयोजक/सचिव

डॉ० जितेन्द्र कुमार नेगी

(प्राचार्य, राठ महाविद्यालय पैठाणी)

संगोष्ठी के विषय में

वनाग्नियाँ एवं जलवायु परिवर्तन आज के युग की गम्भीर वैश्विक समस्याएँ हैं, जो परस्पर जुड़ी हुयी हैं और सम्पूर्ण जैव मण्डल को प्रभावित कर रही हैं। वनाग्नि चाहे वह प्राकृतिक कारणों से हो या मानवीय लापरवाही से, न केवल मूल्यवान वन सम्पदा को नष्ट करती है, बल्कि वायुमण्डल में विशाल मात्रा में कार्बन-डाई-ऑक्साइड भी छोड़ती है। यह गैस ग्रीन हाउस प्रभाव को बढ़ावा देती है, जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।

जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा, अत्यधिक गर्मी और वर्षा की अनियमितता जैसे मौसम सम्बन्धी बदलाव होते हैं, जो वनाग्नियों की आवृत्ति एवं तीव्रता को और अधिक बढ़ा देते हैं। विशेष रूप से अमेजन, ऑस्ट्रेलिया, कैलिफोर्निया और साइबेरिया जैसे क्षेत्रों में भीषण वनाग्नियों के उदाहरण सामने आये हैं, जिसका प्रभाव न केवल स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर बल्कि वैश्विक पर्यावरण पर भी पड़ रहा है।

इन वनाग्नियों के कारण लाखों जीव जन्तुओं का जीवन समाप्त हो जाता है, वनों की जैव विविधता नष्ट हो जाती है और जन जीवन भी संकट में आ जाता है। इसके साथ ही प्रदूषण का स्तर बढ़ता है और मानव स्वास्थ्य पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। हमारे राज्य उत्तराखण्ड में भी वनाग्नि प्रतिवर्ष विकराल रूप में घटित हो रही है। यह अब पर्यावरणीय आपदा का रूप ले चुकी है।

इस वैश्विक संकट से निपटने के लिये हमें सतत वन प्रबंधन, जन जागरूकता, आधुनिक तकनीकों से निगरानी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जैसे उपाय अपनाने होंगे, साथ ही हमें जलवायु परिवर्तन के कारणों, जैसे अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करने की दिशा में भी ठोस कदम उठाने होंगे। वनों की रक्षा करना केवल पर्यावरण की नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता की रक्षा करने के समान है।

शीर्षक:

वनाग्नि एवं जलवायु परिवर्तन : एक वैश्विक संकट

उपशीर्षक :

1. वनाग्नि और जलवायु परिवर्तन का पारस्परिक सम्बन्ध।
2. वनाग्नि: कारण एवं प्रकार।
3. मानव गतिविधियों द्वारा वनाग्नि में वृद्धि।
4. जलवायु परिवर्तन और उसका वैश्विक प्रभाव।
5. जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव।
6. वनाग्नि का जैव विविधता पर प्रभाव।

7. वनाग्नि और मानव स्वास्थ्य।
8. भारत में वनाग्नि की स्थिति और चुनौतियाँ।
9. सतत विकास और वन संरक्षण के लिये नीतियाँ।
10. स्थानीय समुदायों एवं सरकारों की भूमिका।
11. उत्तराखण्ड में वनाग्नि एक पर्यावरणीय आपदा।
12. वनाग्नि की रोकथाम में तकनीकी (ड्रोन, सैटेलाइट, जीओपीएस आदि) उपायों की आवश्यकता।
13. वन संरक्षण में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी।

राठ महाविद्यालय : एक संक्षिप्त परिचय

उत्तराखण्ड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जनपद में विकास खण्ड थलीसैन के पैठाणी कस्बे में जिला मुख्यालय से लगभग 48 किमी० दूर स्थित राठ महाविद्यालय पैठाणी की स्थापना वर्ष 2003 में की गयी थी। महाविद्यालय के बगल से ढाईज्यूली गाड प्रवाहित होती है, जो पश्चिमी नयार की सहायक नदी है। जनपद का यह क्षेत्र विकास से कोसों दूर अशिक्षा, पिछड़ेपन, कम उम्र में विवाह, पशुबलि प्रथा से वर्षों तक ग्रसित रहा। हालाँकि प्राथमिक एवं इण्टरमीडिएट स्तर तक यहाँ शिक्षण संस्थानों को स्थापना जरूर हुई, लेकिन उच्च शिक्षण संस्थान युवाओं के लिये दिवा-स्वप्न ही रहा। इस वेदना को समझते हुए ग्राम बहेड़ी के युवा श्री गणेश गोदियाल, जो कि मुम्बई में एक स्थापित उद्यमी थे, ने क्षेत्र के तमाम सम्भ्रान्तजन जागरूक नागरिकों व जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क कर व सहयोग स्थापित कर ग्राम सभा पैठाणी द्वारा दान में दी गयी भूमि पर एक उच्च शिक्षण संस्थान स्थापित किया और नाम रखा गया। राठ महाविद्यालय पैठाणी। 17 जुलाई 2003 में महज 30 छात्र छात्राओं, प्राचार्य, 07 शिक्षक गणों एवं कुछ शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ यह मिशन उच्च शिक्षा प्रारम्भ हुआ जो आगे चलकर नये-नये कीर्तिमान गढ़ता चला गया। यहाँ 2005 में बी०एड० एवं 2012 में बी०पी०एड० कोर्स प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में महाविद्यालय नैक द्वारा प्रदान बी ग्रेड से आच्छादित है एवं निरन्तर विकास की और अग्रसर है। वर्तमान में महाविद्यालय में 750 छात्र/छात्राएँ अध्ययनरत हैं। 26 मार्च 2015 को तत्कालीन राज्य सरकार द्वारा महाविद्यालय को अनुदानित श्रेणी में सम्मिलित कर लिया गया है।

पैठाणी: एक परिचय

पौड़ी गढ़वाल जनपद के कोटद्वार (गढ़वाल) के प्रवेश द्वार से लगभग 130 किमी० दूर स्थित पैठाणी (थेलीसैन ब्लॉक) उत्तराखण्ड के मानचित्र में एक छोटे से गाँव के रूप में अंकित है। यह पैठाणी गाँव राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

उत्तराखण्ड में पर्यटन की दृष्टि से पैठाणी के महत्व को कमतर नहीं आँका जा सकता। यह एक पौराणिक गाँव है। इसका उल्लेख स्कन्दपुराण के

केदारखण्ड में दर्ज है। केदारखण्ड के अनुसार, राष्ट्रकूट पर्वत पर भगवान शिव ने कठोर तप किया था। केदारखण्ड में कहा गया है, “ऊँ: भूर्भुव स्वः राठीनापुरोहव पैठीन सिग्रोत्र राठो इहागेच्छति” अर्थात् राहु के गोत्र पैठीन के कारण इस जगह का नाम पैठाणी पड़ा। राहु के अद्भूत मन्दिर एवं राष्ट्रकूट पर्वत के कारण यह पूरा क्षेत्र राठ क्षेत्र कहलाता है। मान्यताओं के अनुसार पैठाणी स्थित प्रसिद्ध मन्दिर का निर्माण आठवीं शताब्दी ईसवी में आदि शंकराचार्य द्वारा करवाया गया।

पंजीकरण :- पंजीकरण ऑन लाइन माध्यम से लिंक पर जाकर तथा ऑफ लाइन माध्यम से महाविद्यालय में उपस्थित होकर किया जा सकता है। लिंक- <https://forms.gle/ZL8DdPCWUXVHDDpE8>

1. प्राध्यापक- 800रु०
2. शोध छात्र- 300रु०
3. छात्र- 100रु०

पंजीकरण- शुल्क हेतु आवश्यक विवरण।

खाते का नाम- सेमिनार राठ महाविद्यालय पैठाणी

खाता संख्या - 41846025983

आई०एफ०एस०सी० कोड- SBIN0007493

शाखा - एस० बी० आई० पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) उत्तराखण्ड।

इसके अतिरिक्त सेमिनार स्थल पर भी पंजीकरण शुल्क जमा किया जा सकता है

पंजीकरण हेतु सम्पर्क सूत्र:-

1. डॉ० देवकृष्ण मो० नं०-9557312613
2. डॉ० राजीव दूबे मो० नं०-9675362906
3. डॉ० अखिलेश कुमार सिंह मो० नं०-9760455496

समस्त सम्भावित प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे अपने शोध पत्र से सम्बन्धित सारांश (ABSTRACT) 200 शब्दों में दिये गये ई-मेल rmvpaithani.seminar019@gmail.com पर हिन्दी भाषा में लिखे गये शोध पत्र Krutidev10 फॉन्ट एवं Size 14 तथा अंग्रेजी भाषा में लिखे गये शोध पत्र Arial Font Size 12 में प्रस्तुत करें। सारांश (ABSTRACT) प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 3 जून 2025 है। विषय तथा उपविषय से सम्बन्धित मौलिक एवं प्रासंगिक शोधपत्र प्रकाशन हेतु rmvpaithani.seminar019@gmail.com पर दिनांक 05 जून 2025 तक प्रेषित किया जा सकता है, जिसका प्रकाशन आई०एस०बी०एन० युक्त सम्पादित पुस्तक में किया जायेगा। प्रकाशन शुल्क एकल लेखक के रूप में 800 रु० तथा युगल लेखक के रूप में 1000 रु० निर्धारित है, जिसे ऊपर वर्णित सेमिनार राठ महाविद्यालय पैठाणी के खाते में जमा किया जा सकता है।